

विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थकर पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(दोहा)

द्वीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थकर बीस ।

तिन सबकी पूजा करूँ, मन-वच-तन धरि सीस ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकराः! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थकराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थकराः । अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् ।

इन्द्र-फणीन्द्र-नरेन्द्र-वन्द्य पद निर्मल धारी ।

शोभनीक संसार सार गुण हैं अविकारी ॥

क्षीरोदधि-सम नीर सों (हो) पूजों तृषा निवार ।

सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार ॥

श्री जिनराज हो भव-तारण-तरण जिहाज ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-
अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम-
ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येति विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो
जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाथ जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक के जीव पाप-आताप सताये ।

तिनकों साता दाता शीतल वचन सुहाये ॥

बावन चंदन सों जजूँ (हो) भ्रमन-तपत निरवार ॥सीमं. ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो भवातापविनाशनाथ चन्दनं नि. स्वाहा ।

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी ।

तातैं तारे बड़ी भक्ति-नौका जगनामी ॥

तंदुल अमल सुगंध सों (हों) पूजों तुम गुणसार ॥सीमं. ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

भविक-सरोज-विकाश निंद्य-तम हर रवि-से हो ।

जति-श्रावक आचार कथन को तुमही बड़े हो ॥

फूल सुवास अनेक सों (हो) पूजों मदन-प्रहार ॥सीमं. ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

काम-नाग विषधाम नाश को गरुड़ कहे हो ।

छुधा महा दव-ज्वाल तास को मेघ लहे हो ॥

नेवज बहुधृत मिष्ट सों (हों) पूजों भूखविडार॥

सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।

श्रीजिनराज हो भव-तारण-तरण जिहाज॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

उद्यम होन न देत सर्व जगमांहि भर्यो है।

मोह-महातम घोर नाश परकाश कर्यो है॥

पूजों दीप प्रकाश सों (हो) ज्ञान-ज्योति करतार॥सीमं॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा।

ध्यान अगनि कर प्रकट सर्व कीनो निरवारा॥

धूप अनूपम खेवतें (हो) दुःख जलैं निरधार॥सीमं॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि. स्वाहा।

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकार भरे हैं।

सबको छिन में जीत जैन के मेरु खड़े हैं॥

फल अति उत्तम सों जजों (हों) वांछित फल-दातार॥सीमं॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।

गणधर-इन्द्रनि हू तैं थुति पूरी न करी है॥

‘द्यानत’ सेवक जानके (हो) जग तैं लेहु निकार॥सीमं॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

ज्ञान-सुधाकर चन्द, भविक-खेत हित मेघ हो।

भ्रम-तम भान अमन्द, तीर्थकर बीसों नमों॥

(चौपाई)

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमन्धर जुगमन्धर नामी।

बाहु बाहु जिन जग-जन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे॥

जात सुजात केवलज्ञानं, स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं ।
 ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरज कोषं ॥
 सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
 वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं ॥
 भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता ।
 ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥
 वीरसेन वीरं जग जानैं, महाभद्र महाभद्र बखानै ॥
 नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजित वीरज बलधारी ॥
 धनुष पाँचसै काय विराजै, आयु कोटि पूर्व सब छाजै ।
 समवशरण शोभित जिनराजा, भवजल-तारन-तरन जिहाजा ॥
 सम्यक् रत्नत्रय-निधि दानी, लोकालोक-प्रकाशक ज्ञानी ।
 शत-इन्द्रनि करि वंदित सोहैं, सुन-नर-पशु सबके मन मोहैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

तुमको पूजें वंदना, करैं धन्य नर सोय ।
 'द्यानत' सरधा मन धरैं, सो भी धर्मी होय ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

मैं महा-पुण्य उदय से जिन-धर्म पा गया ॥ टेक ॥
 चार घाति कर्म नाशे, ऐसे अरहंत हैं ।
 अनन्त चतुष्टय धारी, श्री भगवन्त हैं ॥
 मैं अरहत देव की शरण आ गया ॥ मैं ॥
 अष्ट कर्म नाश किये, ऐसे सिद्ध-देव हैं ।
 अष्ट गुण प्रकट जिनके, हुए स्वयमेव हैं ॥
 मैं ऐसे सिद्ध देव की शरण आ गया ॥ मैं ॥
 वस्तु का स्वरूप बताये, वीतराग-वाणी है ।
 तीन लोक के जीव हेतु, महाकल्याणी है ॥
 मैं जिनवाणी माँ की शरण आ गया ॥ मैं ॥
 परिग्रह रहित, दिगम्बर मुनिराज हैं ।
 ज्ञान-ध्यान सिवा नहीं, दूजा कोई काज है ॥
 मैं श्री मुनिराज की शरण आ गया ॥ मैं ॥